ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, कृषि मौसम विभाग
जलवायु परिवर्तन पर उच्च अध्ययन केन्द्र
डा0 राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय
पूसा,समस्तीपुर (बिहार)–848125

बुलेटिन संख्या–87
दिनांक– मंगलवार, 25 नवम्बर, 2025

विगत मौसम पूर्वानुमान अवधि का आकलन

मौसमीय वेधशाला पूसा के आकलन के अनुसार पिछले तीन दिनों का औसत अधिकतम एवं न्यूनतम तापमान क्रमशः 27.6 एवं 13.0 डिग्री सेल्सियस रहा। औसत सापेक्ष आर्द्रता 95.0 प्रतिशत सुबह में एवं दोपहर में 55.0 प्रतिशत, हवा की औसत गति 9.2 कि0मी0 प्रति घंटा एवं दैनिक वाष्पन 1.6 मि0मी0 तथा सूर्य प्रकाश अवधि औसतन 1.7 घन्टा प्रति दिन रिकार्ड किया गया तथा 5 से0मी0 की गहराई पर भूमि का औसत तापमान सुबह में 18.4 एवं दोपहर में 26.0 डिग्री सेल्सियस रिकार्ड किया गया। इस अवधि में मौसम शुष्क रहा।

मध्यावधि मौसम पूर्वानुमान
(25–30 नवम्बर, 2025)

ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, डा0आर0पी0सी0ए0यू0, पूसा, समस्तीपुर एवं भारत मौसम विज्ञान विभाग के सहयोग से जारी 25–30 नवम्बर, 2025 तक के मौसम पूर्वानुमान के अनुसारः–

- पूर्वानुमान की अवधि में उत्तर बिहार के जिलों में आसमान प्रायः साफ तथा मौसम क शुष्क रहने का अनुमान है।
- इस अवधि में अधिकतम तापमान 25–27 डिग्री सेल्सियस के बीच रह सकता है। जबकि न्यूनतम तापमान 12–14 डिग्री सेल्सियस के आस–पास रह सकता है।
- सापेक्ष आर्द्रता सुबह में 90 से 95 प्रतिशत तथा दोपहर में 75 प्रतिशत रहने की संभावना है।
- औसतन 5 से 8 कि0मी0 प्रति घंटा की रफ्तार से पछिया हवा चलने की संभावना है।

• समसामयिक सुझाव

- गेहूँ की बुआई के लिए तापमान तथा अन्य मौसमीय परिस्थितियाँ अनुकूल है। किसान भाई प्राथमिकता देकर गेहूँ की बुआई करें। खेत की तैयारी के समय 150–200 क्विटल कम्पोस्ट, 60 किलोग्राम नेत्रजन, 60 किलोग्राम फॉसफोरस एवं 40 किलोग्राम पोटाश प्रति हेक्टेयर की दर से व्यवहार करें। बुआई हेतु एच० डी० –2967, एच० डी० –2733, एच० डी० –2824, डी० डब्लू० 187, डी० डब्लू० 39, एच० यु० डब्लू० 468, सी० बी० डब्लू० 38 किस्में उत्तर बिहार के लिए अनुशंसित है। बीज को बुबाई से पहले बेबीस्टीन 2.5 ग्राम की दर से प्रति किलोग्राम बीज को उपचारित करें। दीमक से बचाव के लिए क्लोरपायरिफॉस 20 ई0सी0 दवा का 8 मि0ली0 प्रति किलोग्राम बीज की दर से अवश्य उपचारित करें। छिटकबाँ विधि से बुआई के लिए प्रति हेक्टेयर 125 किलोग्राम तथा सीड ड्रील से पंक्ति में बुआई के लिए 100 किलोग्राम बीज का व्यवहार करें।
- धान की कटाई के बाद राई की पिछेती किस्में राजेन्द्र अनुकूल, राजेन्द्र सुफलाम तथा राजेन्द्र राई पिछेती की बुवाई इस माह के अंत तक अवश्य कर लें। जिन खेतों में राई की फसल 20 से 25 दिन की हो गई है, वहां निकौनी व बछनी करते हुए पौधों के बीच की दूरी 12–15 सेमी रखें। साथ ही सभी सब्जी फसलों में समय पर निकाई–गुड़ाई करें और आवश्यकता अनुसार सिंचाई का प्रबंधन बनाए रखें।
- रबी मक्का की बुआई 30 नवम्बर तक सम्पन्न कर लें। इसके बाद बुआई करने से उपज प्रभावित हो सकती है। बुआई के लिए संकर किस्में शक्तिमान 1 सफेद, शक्तिमान 2 सफेद, शक्तिमान–3 पीला, शक्तिमान 4 पीला, शक्तिमान–5 पीला, गंगा 11 नारंगी पीला, राजेन्द्र संकर मक्का 1, राजेन्द्र संकर मक्का 2 एवं राजेन्द्र संकर मक्का दीप ज्वाला तथा संकुल किस्में– देवकी सफेद, लक्ष्मी सफेद एवं सुआन पीला इस क्षेत्र के लिए अनुशंसित है। खेत की जुताई में 50 किलोग्रम नेत्रजन, 75 किलोग्रम फास्फोरस एवं 50 किलोग्रम पोटाश प्रति हेक्टर की दर से प्रयोग करें।
- आलू की रोपाई यथाशीघ्र समपन्न करे। कुफरी चन्द्रमुखी, कुफरी अशोका, कुफरी पुखराज, कुफरी बादशाह, कुफरी लालीमा, कुफरी ज्योति, कुफरी सिंदुरी, कुफरी आनन्द, कुफरी पुष्कर, कुफरी अरुण, कुफरी गिरधारी, कुफरी सदाबहार, राजेन्द्र आलू– 1, राजेन्द्र आलू– 2 तथा राजेन्द्र आलू–3। बीज दर 25–30 क्विंटल प्रति हेक्टेयर रखे। पंक्ति से पक्ति की दुरी 50–60 से0मी0 एवं बीज से बीज की दुरी 15–20 से0मी0 रखें। आलू को काट कर लगाने पर तीन स्वस्थ आँख वाले टुकडे को उपचारित कर 24 घंटे के अन्दर लगावे। बीज को एगलॉल या एमीसान के 0.5 प्रतिशत घोल या डाइथेन एम0 45 के 0.2 प्रतिशत घोल में 10 मिनट तक उपनचारित कर छाया में सुखाकर रोपनी करे। समूचा आलू (20–40 ग्राम) लगाना श्रेष्ठकर है। खेत की जुताई में कम्पोस्ट 200–250 क्विटल, 75 किलोग्रम नेत्रजन, 90 किलोंग्रम फास्फोरस एवं 100 किलोग्रम पोटाश प्रति हेक्टर की दर से प्रयोग करें।
- चना की बुआई के लिए उपयुक्त समय चल रहा है। खेत की तैयारी के समय 20 किलोग्राम नेत्रजन, 45 किलोग्राम फॉसफोरस, 20 किलोग्राम पोटास एवं 20 किलोग्राम सल्फर प्रति हेक्टेयर की दर से व्यवहार करें। चना के लिए उन्नत किस्म पूसा–256, के0पी0जी0–59(उदय), के0डब्लू0आर0 108, पंत जी 186 एवं पूसा 372 अनुशंसित हैं। बीज को बेबीस्टीन 2.5 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज की दर से उपचारित करें। 24 घंटा बाद उपचारित बीज को कजरा पिल्लू से बचाव हेतु क्लोरपाईरीफॉस 8 मि0ली0 प्रति किलोग्राम की दर से मिलावें। पुनः 4 से 5 घंटे छाया में रखने के बाद राईजोबीयम कल्वर (पॉच पैकेट प्रति हेक्टेयर) से उपचारित कर बुआई करें। छोटे दानों की किस्मों के लिए बीज दर 75 से 80 किलोग्रम एवं बड़े दानों के लिए 100 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर तथा दूरी 30X10 से0मी0 रखें।
- विगत माह बोयी गई मटर, राजमा एवं सब्जियों वाली फसलें– बैगन, टमाटर, मिर्च, पत्तागोभी एवं फूलगोभी में निकाई गुराई तथा आवश्यकतानुसार सिंचाई करें। सब्जियों में कीट–व्याधि की निगरानी करें।
- अक्टुबर माह में बोयी गयी लहसुन की फसल से खर–पतवार की निकासी कर हल्की सिंचाई आवश्यकतानुसार करें। फसल में कीट की निगरानी करें।
- चारे के लिए जई तथा बरसीम की बुआई करें। जई के लिए 80–100 किलो ग्राम बीज तथा बरसीम के लिए 25–30 किलो ग्राम बीज प्रति हेकटेयर का व्यवहार करें।
- ठंढ के मौसम में दुधारु पशुओं को सुखे स्थानों पर रखें एवं जलजमाव, गोबर मुत्र जमाव नहीं होने दें। दाने में तेलहन अनाज की मात्रा बढ़ा दें। नवम्बर से मार्च माह तक पशुओं को डेगनाला रोग से बचाव के लिए धान की पुआँल को सुखाकर एवं हरे चारे के साथ खिलावें। फफूंद लगे पुआँल को खिलाने से डेगनाला रोग की संभावना बढ़ जाती है।

आज का अधिकतम तापमानः 26.5 डिग्री सेल्सियस, सामान्य से 1.0 डिग्री सेल्सियस कम	आज का न्यूनतम तापमानः 9.5 डग्री सेल्सियस, सामान्य से 4.1 डिग्री सेल्सियस कम

(डॉ0 ए. सत्तार)
नोडल पदाधिकारी